B.A Part-1 Paper-1 Topic- Biological determinants of Personality. Dr. Prabha Shree (Guest Faculty, Deptt of Psychology, Vaishali Mahila College, Hajipur)

व्यक्तित्व के जैविक निर्धारक

(Biological Determinants of Personality)

जैविक या अनुवांशिक कारक वह कारक होते हैं जो जन्म के समय से ही व्यक्ति में मौजूद होते हैं तथा व्यक्तित्व के निर्माण में भूमिका निभाते हैं ऐसे कारक निम्न है-

1. **शारीरिक संरचना एवं स्वास्थ्य-**

   शारीरिक संरचना के अंतर्गत व्यक्ति की लंबाई, उसका रंग रूप, शारीरिक गठन इत्यादि शामिल होता है। यह सभी शीलगुण अनुवांशिक होते हैं जो

उन्हें अपने पूर्वजों से प्राप्त होते हैं। इन शीलगुणों का व्यक्ति के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। जो व्यक्ति अच्छे शारीरिक संरचना वाले होते हैं उनमें सामाजिक शीलगुण जैसे आत्मविश्वास, सामाजिकता, उत्तरदायित्व आदि का भी विकास तेजी से होता है तथा सामान्यतः जो अच्छी शारीरिक संरचना के व्यक्ति नहीं होते हैं उनमें उपयुक्त शीलगुण अपेक्षाकृत कम विकसित होते हैं क्योंकि अधिकतर समाज का उनके प्रति दृष्टिकोण उपेक्षा भरा होता है।

2. **<u>अंतः स्रावी ग्रंथियां एवं रासायनिक परिवर्तन-</u>** हमारे शरीर में विभिन्न प्रकार की ग्रंथियां पायी जाती हैं जिनसे विभिन्न प्रकार के रसायन अर्थात हारमोंस निकलते हैं जो हमारे शरीर में परिवर्तन उत्पन्न करते हैं। इसी कारण कभी हम बहुत सक्रिय, कभी निष्क्रिय या कभी-कभी अपने आप को विषादी अनुभव करते हैं। ग्रंथियों को हम दो भागों में बांट सकते हैं बहिःस्रावी ग्रंथियां तथा अंतःस्रावी ग्रंथियां। बहिःस्रावी ग्रंथियां व्यक्तित्व के निर्धारण में महत्वपूर्ण नहीं होती क्योंकि इनसे निकलने

वाला हारमोंस शरीर के बाहर निकल जाता है जैसे अश्रु ग्रंथि। अंतःस्रावी ग्रंथियां वह होती हैं जिनके द्वारा निकलने वाला स्राव अर्थात हारमोंस सीधे रक्त में मिलकर व्यक्तित्व के विकास में योगदान देते हैं। जैसे एड्रिनलीन हार्मोन, थायराक्सिन हार्मोन आदि।

3. **स्नायु मंडल-** मनोवैज्ञानिकों के अनुसार ऐसे व्यक्ति जिनका स्नायु मंडल अधिक विकसित तथा जटिल होता है उनके बुद्धि अधिक होती है तथा वह परिस्थितियों के साथ समायोजन अच्छी प्रकार से कर

सकता है। इस प्रकार के समायोजन क्षमता वाले व्यक्तियों का व्यक्तित्व आकर्षक होता है तथा दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता भी रखते हैं।